AURA - AN INTERNATIONAL BI-ANNUAL MULTIDISCIPLINARY E-RESEARCH JOURNAL

ISSN: 2348-6449 https://bmb.ac.in/aura/ aurabmb@gmail.com

==

महाराष्ट्र की सहकारी बैंकों द्वारा गृहनिर्माण कार्य हेतु किए गए योगदान का मूल्यांकन"

Dr. Rajesh. S. Bahurupi

Associate Professor

BhiwapurMahavidyalaya

Bhiwapur

==

1. Abstract

देश के आर्थिक विकास में सहकारी बैंकों का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। "विकसित भारत 2047" के परिप्रेक्ष्य में भी सहकारी बैंकों की भूमिका अत्यंत निर्णायक सिद्ध होने वाली है। इस विकास प्रक्रिया में वाणिज्यिक बैंक, सहकारी बैंक तथा निजी बैंक—इन सभी का महत्व निर्विवाद है

समाज में भोजन, वस्त्र और आवास ये मानव की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मनुष्य निरन्तर प्रयासरत रहता है तथा अपनी सुविधा एवं क्षमता के अनुसार व्यवसाय, उद्योग या नौकरी के माध्यम से इन्हें पूरा करने का प्रयत्न करता है। तथापि प्रथम दृष्टया**आवास**का प्रश्न अत्यंत गंभीर रूप में उभरकर सामने आता है, क्योंकि एक सामान्य व्यक्ति के लिए स्वयं का घर बनाना सहज नहीं होता। नौकरी करने वाला व्यक्ति भी जीवनभर की कमाई लगाकर ही अपना घर बना पाता है। यही कारण है कि विभिन्न बैंक नागरिकों को गृह-निर्माण हेतु ऋण उपलब्ध कराते हैं। इस उद्देश्य से वाणिज्यिक बैंक, सहकारी बैंक तथा निजी बैंक—सभी प्रकार की संस्थाएँ गृहऋण प्रदान करती हैं।

विशेषतः सहकारी पतसंस्थाओं ने वर्तमान समय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए महाराष्ट्र में किसानों को साहूकारों के चक्रव्यूह से मुक्त कराने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त

ISSN: 2348-6449 https://bmb.ac.in/aura/ aurabmb@gmail.com

की है। एक समय राज्य में किसान आत्महत्या की घटनाएँ अत्यधिक थीं; परन्तु सहकारी बैंकों की सहायताओं एवं हस्तक्षेप के कारण इसमें उल्लेखनीय कमी आयी है।

सहकारी बैंक व्यक्तिगत ऋण, वाहन ऋण तथा गृहऋण सहित विभिन्न प्रकार के ऋण उपलब्ध कराते हैं। विशेषतः वे बड़े पैमाने पर गृहऋण वितरण में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। लघु एवं वंचित वर्ग के आर्थिक उत्थान के लिए भारत में सहकार एवं सहकारी आंदोलन अत्यंत सफल सिद्ध हुआ है

2.Review of Key Research Works for the Proposed Research

सहकारीसमितिहोमलोनपरप्रमुखअनुसंधानकार्योंकीसमीक्षा

सहकारीसमितियोंद्वाराप्रदानकिएजानेवालेहोमलोनपरकईशोधकार्यकिएगएहैं।इनमेंसेकुछप्रमुखअनुसंधानकार्योंकीसमीक्षानिम्नलिखितहैरू

.

सहकारीबैंकऔरग्रामीणविकासरूएकअध्ययनमेंसहकारीबैंकोंकीभूमिकाऔरग्रामीणविकासपरउनकेप्रभावकाविश्लेषणकियागयाहै।इसअध्ययनमेंपायागयाकिसहकारीबैंकग्रामीणक्षेत्रोंमेंवित्तीयसेवाएंप्रदानकरनेमेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभातेहैं।

.

होमलोनकीमांगऔरआपूर्तिरूएकअन्यअध्ययनमेंहोमलोनकीमांगऔरआपूर्तिकाविश्लेषणकियागयाहै।इसअध्ययनमेंपायागयाकिहोमलोनकीमांगबढ़रहीहैएलेकिनआपूर्तिकमहै।

.

सहकारीसमितियोंकीवित्तीयप्रदर्शनरूएकअध्ययनमेंसहकारीसमितियोंकीवित्तीयप्रदर्शनकाविश्लेषणकियागयाहै।इसअध्ययनमेंपायागयाकिसहकारीसमितियोंकीवित्तीयप्रदर्शनअच्छीहैएलेकिनउन्हेंऔरअधिकसुधारकीआवश्यकताहै।

ISSN: 2348-6449 https://bmb.ac.in/aura/ aurabmb@gmail.com

.

होमलोनकेलिएआवश्यकदस्तावेजरूएकअध्ययनमेंहोमलोनकेलिएआवश्यकदस्तावेजोंकाविश्लेषणकियागयाहै।इसअध्ययनमेंपायागयाकिहोमलोनकेलिएआवश्यकदस्तावेजोंकीप्रक्रियाजटिलहैऔरइसमेंसुधारकीआवश्यकताहै।

.

सहकारीसमितियोंकीभूमिकारूएकअध्ययनमेंसहकारीसमितियोंकीभूमिकाकाविश्लेषणकियागयाहै।इसअध्ययनमेंपायागयाकिसहकारीसमितियांग्रामीणक्षेत्रोंमेंवित्तीयसेवाएंप्रदानकरनेमेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभातीहैं।

3.Identification of research gap

भारत में वर्ष 1904 में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में सर्वप्रथम ग्रामीण तथा सहकारी ऋण-प्रदाय संस्थाओं की स्थापना हुई। मनुष्य के लिए भोजन, वस्त्र और आवास जितना आवश्यक है, उतनी ही उसके लिए उपयुक्त निवास की आवश्यकता भी होती है। उचित तथा किफायती दरों पर गुणवत्तापूर्ण आवास उपलब्ध कराना मुख्यतः सहकारी बैंकों के माध्यम से ही संभव हो सका है।

भारत के वाणिज्यिक, निजी और सहकारी बैंकिंग तंत्र का विश्लेषण करने पर पाया जाता है कि सहकारी बैंक सामान्य एवं आर्थिक रूप से दुर्बल वर्ग को ऋण उपलब्ध कराने में अग्रणी हैं। वित्तीय सहायता के संदर्भ में वे समाज के निम्नस्तरीय एवं तळागळातील (ग्रासरूट) वर्ग तक पहुँचकर ऋण प्रदान करते हैं। अनेक नागरिकों के घर-निर्माण के स्वप्न को साकार करने में सहकारी बैंकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

इस प्रकार, वैश्विक स्तर पर आर्थिक महासत्ता बनने के लिए देश के नागरिकों को आवास-निर्माण हेतु ऋण उपलब्ध कराकर सहकारी बैंक उल्लेखनीय योगदान दे रहे हैं। महाराष्ट्र में

ISSN: 2348-6449 https://bmb.ac.in/aura/ aurabmb@gmail.com

सहकारी बैंकों का विकास व्यापक स्तर पर देखने को मिलता है। इस शोध हेतु नमूना-चयन में विभिन्न सहकारी बैंकों को सम्मिलित किया जाएगा।

लघु एवं कमजोर वर्ग के आर्थिक उत्थान के लिए सहकार तथा सहकारी आंदोलन भारत में अत्यंत सफल सिद्ध हुआ है। भारत में गरीब तथा मध्यमवर्गीय नागरिकों की संख्या कुल जनसंख्या के आधे से भी अधिक है, जिसके कारण इन वर्गों के लिए सहकारी संस्थाओं का कार्य विशेष रूप से महत्वपूर्ण बन जाता है। भारत में वर्ष 1904 में ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में पहली बार ग्रामीण एवं सहकारी ऋण-प्रदाय संस्थाओं की स्थापना की गई। मनुष्य के लिए भोजन, वस्त्र और आवास जितना आवश्यक है, उतना ही उपयुक्त निवास भी उसकी मूलभूत आवश्यकता का अंग है। उचित व्यय में गुणवत्तापूर्ण आवास उपलब्ध कराना मुख्यतः सहकारी पद्धति के माध्यम से ही संभव हो सकता है।

5. Major Research Questions and If Applicable Hypotheses

1. भारतकेसहकारीबैंकघरऋणदेनेवालोंकोज़्यादाप्राथमिकतादेतेहैं।
2. भारतमेंसहकारीबैंकोंकीऋणब्याजदरेंदूसरेबैंकोंकीतुलनामेंकमहैं।
3. भारतमेंज़्यादातरगरीबऔरमध्यमवर्गकेलोगऋणकेलिएसहकारीबैंकोंपरनिर्भरहैं।
4. भारतमेंसहकारीबैंकोंकीघरऋणयोजनाएंसभीकेलिएउपलब्धहैं।
5. यासहकारीबैंकोंकीकमब्याजदरोंकेकारण, आमलोगोंकेघरबनानेकाखर्चकमहोजाताहै।
6. भारतमेंसहकारीबैंकोंसेघरऋणयोजनाओंसेदेशकेआर्थिकविकासपरअच्छाअसरहोरहाहै.

Proposed Methodology for the Research Work

इस अध्ययन के लिए महाराष्ट्र की सहकारी बैंकों का चयन किया जाएगा। गृहनिर्माण ऋण के संदर्भ में प्रत्येक सहकारी बैंक का मूल्यांकन किया जाना आवश्यक होने के कारण नमूना-चयन

में सभी सहकारी बैंकों को सम्मिलित किया जाएगा। सहकारी बैंकों के ऋण-विषयक सभी पहलुओं का इस अध्ययन में सम्यक् रूप से विश्लेषण किया जाएगा।

1. प्राथमिक स्रोत:

अध्ययन के लिए आवश्यक जानकारी संकलित करने हेतु विदर्भ क्षेत्र की सहकारी बैंकों के अधिकारियों के साक्षात्कार लिए जाएंगे तथा उनसे प्राप्त सूचनाओं को संकलित किया जाएगा।

2. द्वितीयक स्रोत:

विदर्भ क्षेत्र की सहकारी बैंकों द्वारा समय-समय पर प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेदन, विवरणिकाएँ, प्रपत्र आदि अध्ययन हेतु उपयोग किए जाएंगे। इन बैंकों के वित्तीय विवरणों का भी विश्लेषण में समावेश किया जाएगा।

सहकारीसमितिकानवाचारउद्यम

1. भारतमें, सहकारीबँकनेआवासक्षेत्रमेंकईनवाचारपहलकीहैं, जोएकमहत्वपूर्णपहलहै।

2. भारतमें, मध्यमवर्गकोध्यानमेंरखतेहुए, सहकारीबँकनेघरबनानेमेंमददकीहै, जिससेमध्यमवर्गकोफायदाहोताहै।

3. भारतमें, सहकारीबैंकघरबनानेकेलिएकमब्याजदरोंपरलोनदेतेहैं।इसलिए, मध्यमवर्गसहकारीबैंकोंसेलोनलेनापसंदकरताहै।

4. भारतमें, सहकारीकर्जदेतेसमयउसकीगुणवत्ताकोप्राध्यान्यदेतीहै.

5. सहकारीबैंकसामुहीकगृहनिर्माणकार्यकोअधिकांशप्राधान्यदेतीहै।इसवजहसे, निर्माणकीलागतकमहोजातीहैऔरआमलोगभीघरखरीदपानेमेंसक्षमहोतेहै.

ISSN: 2348-6449 https://bmb.ac.in/aura/ aurabmb@gmail.com

भारतमेंघरबनानेमेंसहकारी बैंकोंकाअहमयोगदानहै।येबैंकमध्यमवर्गियोंकाकाध्यानरखतेहैंऔरउन्हेंबहुतकमब्याजदरोंपरघरबनानेके लिएऋ़णदेतेहैं।भारतकेप्रधानमंत्रीनरेंद्रमोदीकेकीसंकल्पनाकेमुताबिक, सहकारीबैंककीपहलइसलक्ष्यकोपानेकेलिएज़रूरीहैकिसबकेपासअपनाघरहो।बैंकऋ़णसुविधाओंकीवजह सेकईगरीबऔरमध्यमवर्गिय परिवारोंकेसपनेपूरेहुएहैं।घरबनानेकेकाममेंअहमयोगदानदेनेकेअलावा, बैंकदेशकेआर्थिकविकासमेंभीअहमभूमिकानिभातीहैं

सहकारी बैंक विभिन्न प्रकार के ऋण प्रदान करते हैं, जिनमें व्यक्तिगत ऋण, वाहन ऋण तथा गृह-ऋण प्रमुख रूप से शामिल हैं।

सहकारी समितियो के घर निर्माण का एक और उद्देश्य है सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को आवास की सुविधा प्रदान करना।

- सदस्योंकोउचितदरोंपरजमीनऔरनिर्माणसामग्रीप्रदानकरना
- सदस्योंकोवित्तीयसहायताप्रदानकरना
- सदस्योंकेबीचसहयोगऔरएकताकोबढ़ावादेना
- आवासकीगुणवत्तामेंसुधारकरना
- सदस्योंकेजीवनस्तरमेंसुधारकरना

References

- सहकारीगृहनिर्माणसंस्थांचेव्यवस्थापन - ArundhatiNatekar, NiraliPrakashan
- सहकारीगृहनिर्माणसंस्थाकामकाजसंहिता - AbhyaShekar, Chaudhari Law Publisher
- गृहनिर्माणसंस्थेचेसुलभव्यवस्थापन - ManishaPrabhu, Suyash Book Gallery
- सहकारीगृहनिर्माणसंस्थासमस्याऔरउपाय - (लिंकउपलब्धनहींहै)
- नागरीसहकारीबँकांचेप्रशिक्षण - Dr.AbhayMandlik, EkviraPrakashan